10-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे, मन्सा-वाचा- कर्मणा किसी को भी दु:ख नहीं देना, कभी किसी पर गुस्सा नहीं करना, प्यार बहुत मीठी चीज़ है, इससे किसी को भी वश कर सकते हो"

प्रश्न:- बाप बच्चों को डबल सिरताज विश्व का मालिक बनने व दी बेस्ट बनने की कौन सी युक्ति बताते हैं?

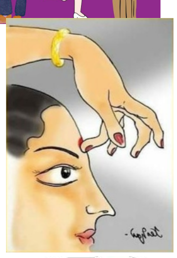

1. **उत्तर:-** दैवीगुण धारण कर बहुत-बहुत मीठा बनो। एक दो को भाई-भाई अथवा भाई बहिन की दृष्टि से देखो। अपने पुरुषार्थ से अपने को राजतिलक दो। 2 - स्वयं ईश्वर बाप तुम्हें पढ़ा रहे हैं तो पढ़ाई में रेग्युलर बनो, जितना पढ़ेंगे पढ़ायेंगे, अपने मैनर्स सुधारेंगे उतना दी बेस्ट बनेंगे।

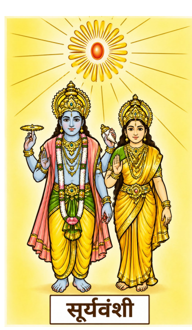

10-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे जानते हैं कि अभी हम नर्क का किनारा छोड़ आगे जा रहे हैं, यह पुरुषोत्तम संगमयुग बिल्कुल अलग है बीच का। बीच के दरिया (सागर) में तुम्हारी बोट (नाव) है। तुम न सतयुगी हो, न कलियुगी हो।

Swamaan

तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुगी सर्वोत्तम ब्राह्मण। संगमयुग होता ही है ब्राह्मणों का। ब्राह्मण हैं चोटी। यह ब्राह्मणों का बहुत छोटा युग है। यह एक ही जन्म का युग होता है। यह है तुम्हारे खुशी का युग। खुशी किस बात की है? भगवान हमको पढ़ाते हैं। ऐसे स्टूडेन्ट को कितनी खुशी होगी! तुमको अब सारे चक्र का ज्ञान बुद्धि में है। अभी हम सो ब्राह्मण हैं फिर हम सो देवता बनेंगे। पहले अपने घर स्वीटहोम में जायेंगे फिर नई दुनिया में आयेंगे। हम ब्राह्मण ही स्वदर्शन चक्रधारी हैं। हम ही यह बाजोली खेलते हैं। इस विराट रूप को भी तुम ब्राह्मण बच्चे ही जानते हो - बुद्धि में सारा दिन यह बातें सिमरण होनी चाहिए।

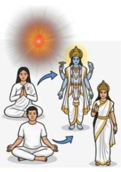

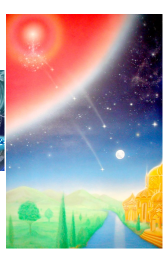

चढ़ाओ नशा...

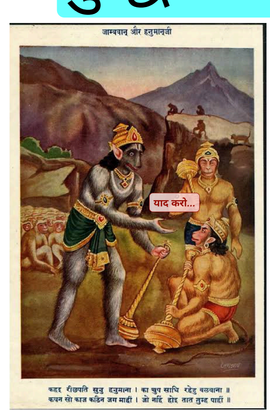

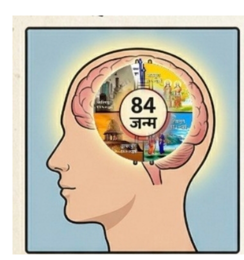

तुम्हारा यह बहुत-बहुत लवली परिवार है, तुम हर

10-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

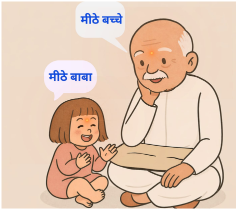

एक को बहुत - बहुत लवली होना चाहिए। बाप भी मीठा है तो बच्चों को भी ऐसा मीठा बनाते हैं। कभी किसी पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। मन्सा, वाचा, कर्मणा किसको दु:ख नहीं देना है। बाप कभी किसको दु:ख नहीं देते, जितना बाप को याद करेंगे उतना मीठे बनते रहेंगे। बस, इस याद से ही बेड़ा पार है - यह है याद की यात्रा। याद करते-करते वाया शान्तिधाम, सुखधाम जाना है। बाप आये ही हैं बच्चों को सदा सुखी बनाने। भूतों को भगाने की युक्ति बाप बतलाते हैं मुझे याद करो तो यह भूत निकलते जायेंगे। कोई में भूत हो तो यहाँ ही मेरे पास छोड़कर जाओ। तुम कहते भी हो बाबा आकर हमारे भूतों को निकाल पतित से पावन बनाओ। तो बाप कितना गुल-गुल बनाते हैं। बाप और दादा दोनों मिलकर तुम बच्चों का श्रृंगार करते हैं। वह हैं हद के बाप, यह है बेहद का बाप। तो बच्चों को बहुत प्यार से चलना और चलाना है। सब विकारों का दान देना चाहिए, दे दान तो छूटे ग्रहण, इसमें कोई बहाने आदि की बात नहीं है। प्यार से तुम किसको भी वश कर सकते हो। प्यार से समझानी दो, प्यार बहुत मीठी चीज़ है। शेर को, हाथी को.... जानवरों को भी मनुष्य प्यार से वश

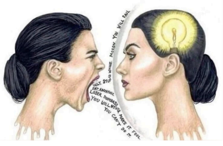

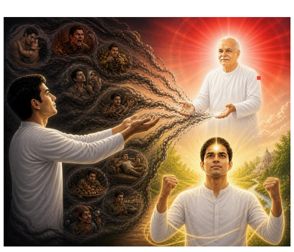

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

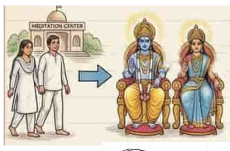

कर लेते हैं। वह तो फिर भी आसुरी मनुष्य हैं, तुम तो अब देवता बन रहे हो। तो दैवीगुण धारण कर बहुत-बहुत मीठा बनना है। एक दो को भाई-भाई अथवा भाई-बहन की दृष्टि से देखो। आत्मा, आत्मा को कभी दु:ख नहीं दे सकती।

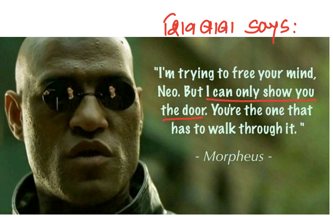

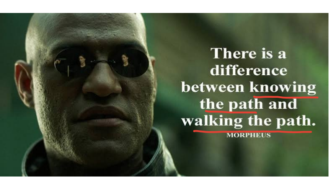

बाप कहते हैं मीठे बच्चे, मैं तुमको स्वर्ग का राज्यभाग देने आया हूँ। अब तुमको जो चाहिए सो हम से लो। हम तो विश्व का मालिक डबल सिरताज तुमको बनाने आये हैं परन्तु मेहनत तुमको करनी है, मैं किसी पर ताज नहीं रखूँगा, तुमको अपने पुरुषार्थ से ही अपने को राजतिलक देना है। बाप पुरुषार्थ की युक्ति बताते हैं कि ऐसे-ऐसे विश्व का मालिक डबल सिरताज अपने को बना सकते हो। पढ़ाई पर पूरा ध्यान दो, कभी भी पढ़ाई को न छोड़ो। कोई भी कारण से रूठकर पढ़ाई को छोड़ दिया तो बहुत-बहुत घाटा पड़ जायेगा। घाटे और फायदे को देखते रहो। तुम ईश्वरीय युनिवर्सिटी के स्टूडेन्ट हो, ईश्वर बाप से पढ़ रहे हो। पढ़कर पूज्य देवता बन रहे हो।

I can only show you the door

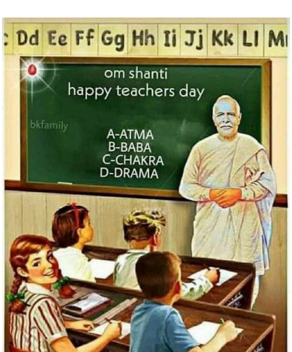

Points: ज्ञान योग धारणा M.imp.

The Best

तो स्टूडेन्ट भी ऐसा रेग्यूलर बनना चाहिए, स्टूडेन्ट लाइफ इज़ दी बेस्ट। जितना पढ़ेंगे पढ़ायेंगे और मैनर्स सुधारेंगे उतना दी बेस्ट बनेंगे।

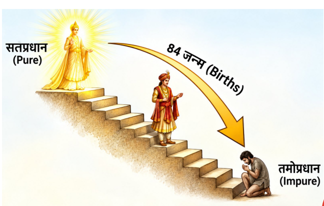

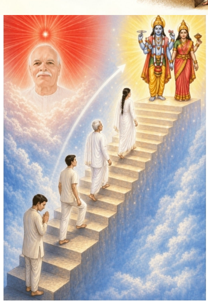

मीठे बच्चे अब तुम्हारी रिटर्न जरनी है, जैसे सतयुग से त्रेता, द्वापर, कलियुग तक नीचे उतरते आये हो वैसे अब तुमको आइरन एज से ऊपर गोल्डन एज़ तक जाना है। जब सिलवर एज तक पहुंचेंगे तो फिर इन कर्मेन्द्रियों की चंचलता खत्म हो जायेगी इसलिए जितना बाप को याद करेंगे उतना तुम आत्माओं से रजो तमो की कट निकलती जायेगी और जितना कट निकलती जायेगी उतना बाप चुम्बक की तरफ कशिश बढ़ती जायेगी। कशिश नहीं होती है तो जरूर कट लगी हुई है, कट एकदम निकल प्योर सोना बन जाए, वह है अन्तिम कर्मातीत अवस्था।

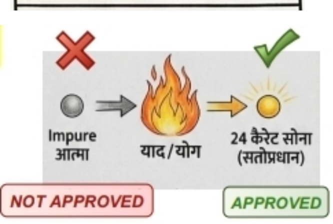

Simple Math..

मूल बात मीठे बच्चों को बाप समझाते हैं देही-

10-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अभिमानी बनो। देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूल मामेकम् याद करो, पावन भी जरूर बनना है। कुमारी जब पवित्र है तो सब उनको माथा टेकते हैं, शादी करने से फिर पुजारी बन पड़ती है। सबके आगे माथा झुकाना पड़ता है। कन्या पहले पियर घर में होती है तो इतने जास्ती सम्बन्ध याद नहीं आते। शादी के बाद देह के सम्बन्ध भी बढ़ते जाते फिर पति बच्चों में मोह बढ़ता जाता। सासू-ससुर आदि सब याद आते रहेंगे। पहले तो सिर्फ माँ-बाप में ही मोह होता है। यहाँ तो फिर उन सब सम्बन्धों को भुलाना पड़ता है क्योंकि यह एक ही तुम्हारा सच्चा-सच्चा मात-पिता है ना। यह है ईश्वरीय सम्बन्ध। गाते भी हैं त्वमेव माता च पिता त्वमेव.. यह मात पिता तो तुमको विश्वका मालिक बनाते हैं इसलिए बाप कहते हैं मुझ बेहद के बाप को निरन्तर याद करो और कोई भी देहधारी से ममत्व न रखो। यह बेहद का बाप जो तुमको स्वर्ग में ले जाते हैं, ऐसे मीठे बाप को बहुत प्यार से याद करते और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। इसी याद के बल से ही तुम्हारी आत्मा कंचन बन स्वर्ग की मालिक बन जायेगी। स्वर्ग का नाम सुनकर ही दिल खुश हो जाती है। जो निरन्तर याद करते

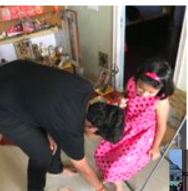

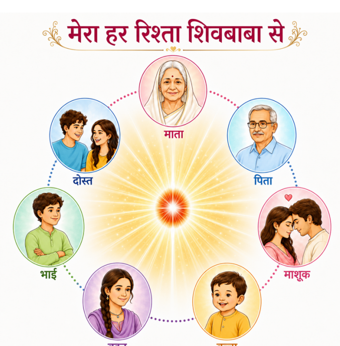

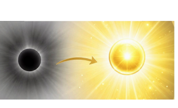
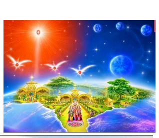
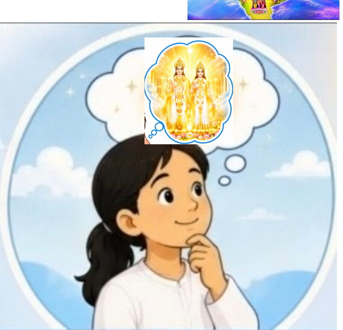

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा

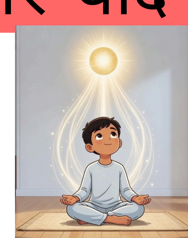

ये तो पक्का कर लो..

10-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

और औरों को भी याद कराते रहेंगे वही ऊंच पद पायेंगे। यह पुरुषार्थ करते-करते (Coming soon...) अन्त में तुम्हारी वह अवस्था जम जायेगी। यह तो दुनिया भी पुरानी है, देह भी पुरानी है, देह सहित देह के सब सम्बन्ध भी पुराने हैं, उन सबसे बुद्धियोग हटाए एक बाप संग जोड़ना है, जो अन्तकाल भी उस एक बाप की ही याद रहे और कोई का सम्बन्ध याद होगा तो फिर (Take it Seriously..) अन्त में भी वह याद आ जायेगा और पद भ्रष्ट हो जायेगा। अन्तकाल जो बेहद बाप की याद में रहेंगे वही नर से नारायण बनेंगे। बाप की याद है तो फिर शिवालय दूर नहीं।

M.M.M.....imp.

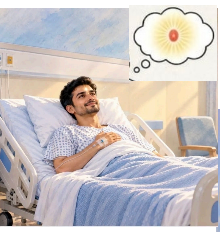

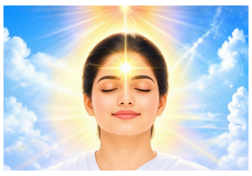

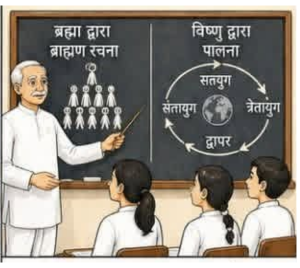

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे बेहद के बाप पास आते ही हैं रिफ्रेश होने लिए क्योंकि बच्चे जानते हैं बेहद के बाप से बेहद विश्व की बादशाही मिलती है, यह कब भूलना नहीं चाहिए। वह सदैव याद रहे तो भी बच्चों को अपार खुशी रहे। यह बैज चलते-फिरते घड़ी-घड़ी देखते रहो, एकदम हृदय से लगा दो। ओहो ! भगवान की श्रीमत से हम यह बन रहे हैं।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

10-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बस बैज को देख उनको प्यार करते रहो। बाबा, बाबा करते रहो तो सदैव स्मृति रहेगी। हम बाप द्वारा यह बनते हैं।

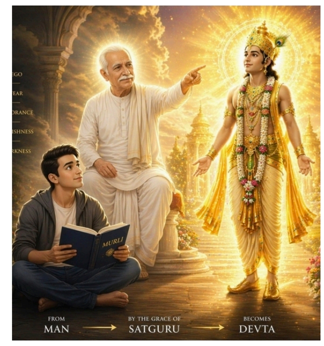

विशाल बुद्धि

मीठे बच्चों की बड़ी विशाल बुद्धि होनी चाहिए। सारा दिन सर्विस के ही ख्यालात चलते रहें। बाबा को तो वह बच्चे चाहिए जो सर्विस बिगर रह न सकें। तुम बच्चों को सारे विश्व पर घेराव डालना है अर्थात् पतित दुनिया को पावन बनाना है। सारे विश्व को दु:खधाम से सुखधाम बनाना है। टीचर को भी पढ़ाने में मज़ा आता है ना। तुम तो अब बहुत ऊंच टीचर बने हो। जितना अच्छा टीचर, वह बहुतों को आपसमान बनायेंगे। कभी थकेंगे नहीं। ईश्वरीय सर्विस में बहुत खुशी रहती है। बाप की मदद मिलती है। यह बड़ा बेहद का व्यापार भी है, व्यापारी लोग ही धनवान बनते हैं। वह इस ज्ञान मार्ग में भी जास्ती उछलते हैं। बाप भी बेहद का व्यापारी है ना। सौदा बड़ा फर्स्टक्लास है परन्तु इसमें बड़ा साहस धारण करना पड़ता है। नये-नये बच्चे पुरानों से भी पुरुषार्थ

M.M.M.....imp.

Points: ज्ञान यो

M.imp.

में आगे जा सकते हैं। हर एक की इन्डीविज्युअल तकदीर है तो पुरुषार्थ भी हर एक को इन्डीविज्युअल करना है, अपनी पूरी चेकिंग करनी चाहिए। ऐसी चेकिंग करने वाले एकदम रात दिन पुरुषार्थ में लग जायेंगे, कहेंगे "हम अपना टाइम वेस्ट क्यों करें। जितना हो सके टाइम सेफ करें।" अपने से पक्का प्रण कर देते हैं, हम बाप को कभी नहीं भूलेंगे, स्कालरशिप लेकर ही छोड़ेंगे। ऐसे बच्चों को फिर मदद भी मिलती है। ऐसे भी नये-नये पुरुषार्थी बच्चे तुम देखेंगे, साक्षात्कार करते रहेंगे। जैसे शुरु में हुआ वही फिर पिछाड़ी में देखेंगे, जितना नज़दीक होते जायेंगे उतना खुशी में नाचते रहेंगे। उधर खूने नाहेक खेल भी चलता रहेगा।

तुम बच्चों की ईश्वरीय रेस चल रही है, जितना आगे दौड़ते जायेंगे उतना नई दुनिया के नज़ारे भी नज़दीक आते जायेंगे। खुशी बढ़ती जायेगी, जिनको नज़ारे नजदीक नहीं दिखाई पड़ते उनको खुशी भी नहीं होगी। अभी तो कलियुगी दुनिया से वैराग्य और

Simple Math..

10-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

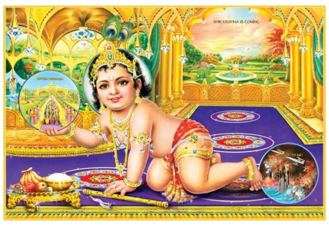
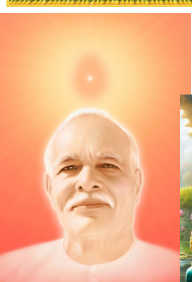

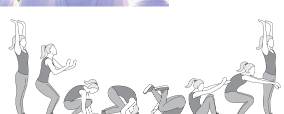

सतयुगी नई दुनिया से बहुत प्यार होना चाहिए। शिवबाबा याद रहेगा तो स्वर्ग का वर्सा भी याद रहेगा। स्वर्ग का वर्सा याद रहेगा तो शिवबाबा भी याद रहेगा। तुम बच्चे जानते हो अभी हम स्वर्ग तरफ जा रहे हैं, पाँव नर्क तरफ हैं सिर स्वर्ग तरफ है। अभी तो छोटे-बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। बाबा को सदैव यह नशा रहता है "ओहो! हम जाकर यह बाल कृष्ण बनूँगा," जिसके लिए इनएडवान्स सौगातें भी भेजते रहते हैं। जिन्हों को पूरा निश्चय है वही गोपिकायें सौगातें भेजती हैं, उन्हें अतीन्द्रिय सुख की भासना आती है। हम ही अमरलोक में देवता बनेंगे। कल्प पहले भी हम ही बने थे फिर हमने 84 पुनर्जन्म लिए हैं। यह बाजोली याद रहे तो भी अहो सौभाग्य – सदैव अथाह खुशी में रहो। बड़ी लाटरी मिल रही है। 5000 वर्ष पहले भी हमने राज्यभाग्य पाया था फिर कल पायेंगे, ड्रामा में नूँध है। जैसे कल्प पहले जन्म लिया था वैसे ही लेंगे, वही हमारे माँ-बाप होंगे। जो श्रीकृष्ण का बाप था वही फिर बनेगा। ऐसे-ऐसे जो सारा दिन विचार करते रहेंगे तो वो बहुत रमणीकता में रहेंगे। विचार सागर मंथन नहीं करते तो गोया अनहेल्दी हैं। अच्छा!

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

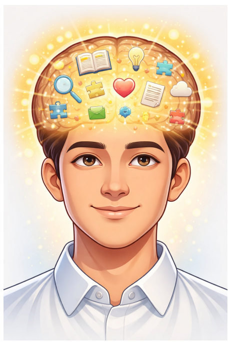

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) ईश्वरीय सर्विस में कभी थकना नहीं है, अच्छा टीचर बन आप समान बनाने की सेवा करनी है।

No one means no one...

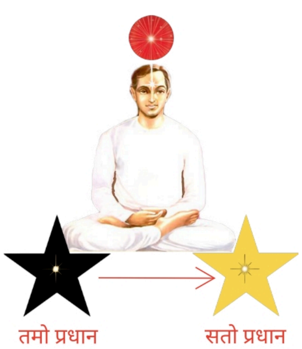

2) याद के बल से आत्मा को कंचन बनाना है, कोई भी देहधारी में ममत्व नहीं रखना है।

Method/Process/Instrument

10-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- साइलेन्स की शक्ति द्वारा सेकण्ड में हर समस्या का हल करने वाले एकान्तवासी भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

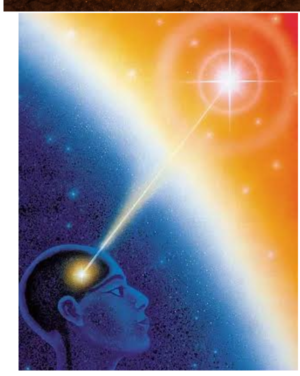

जब कोई भी नई वा शक्तिशाली इन्वेन्शन करते हैं तो अन्डरग्राउण्ड करते हैं।

यहाँ एकान्तवासी बनना ही अन्डरग्राउण्ड है।

जो भी समय मिले, कारोबार करते भी, सुनते-सुनाते, डायरेक्शन देते भी इस देह की दुनिया और देह के भान से परे साइलेन्स में चले जाओ।

इस अभ्यास वा अनुभव करने कराने की स्टेज

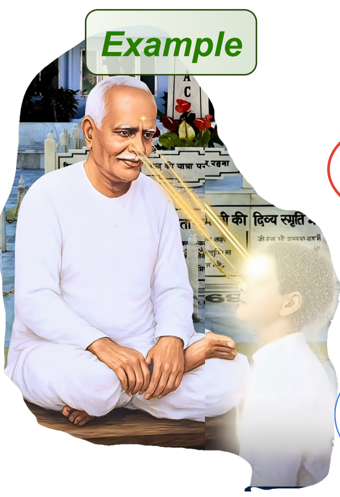

हर समस्या का हल कर देगी।

इससे एक सेकण्ड में किसी को भी शान्ति वा शक्ति की अनुभूति करा देंगे।

जो भी सामने आयेगा वह इसी स्टेज में साक्षात्कार का अनुभव करेगा।

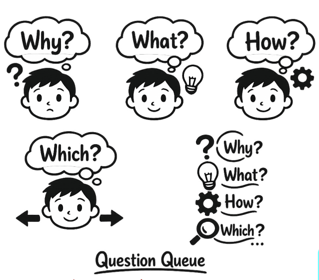

स्लोगन:- व्यर्थ संकल्प वा विकल्प से किनारा कर आत्मिक स्थिति में रहना ही योगयुक्त बनना है।

देही अभिमानी

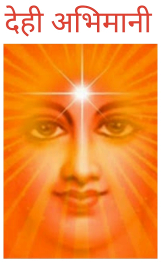

oints: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

10-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो

एक समय की बात है। एक नदी में एक महात्मा स्नान कर रहे थे। तभी एक बिच्छू जो पानी में डूब रहा था, उसे बचाते हुए बिच्छु ने महात्मा को डंक मार दिया। महात्मा ने उसे कई बार बचाने की कोशिश की। बिच्छू ने उन्हें बार-बार डंक मारा। अंतत: महात्मा ने उसे बचाकर नदी के किनारे रख दिया। थोड़ी दूर खड़े यह सब महात्मा के शिष्य देख रहे थे। जैसे ही वे नदी से बाहर आये तो शिष्यों ने पूछा कि जब वह बिच्छू आपको बार-बार डंक मार रहा था तो आपको उसे बचाने की क्या आवश्यकता थी।

तब महात्मा ने कहा- बिच्छू एक छोटा जीव है, उसका कर्म काटना है, जब वह अपना कर्तव्य नहीं भूला, तो मैं मनुष्य हूँ मेरा कर्तव्य दया करना है तो मैं अपना कर्तव्य कैसे भूल सकता हूँ।

शिक्षा- मार्ग कितना भी कठिन क्यों न हों, मनुष्य को कभी अपना कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए।

ब्रह्मा बाप ने बच्चों को मालिक बनाया और स्वयं को सेवाधारी के रूप में रखा।

मालिक पन का मान भी दिया, शान भी दिया, नाम भी दिया। M.M.M.....imp. कभी अपना नाम नहीं किया - मेरे बच्चे।

तो जैसे बाप ने नाम, मान, शान सबका त्याग किया, परोपकार किया, स्वयं का सुख बच्चों के सुख में समझा।

बच्चों की विस्मृति के कारण दु:ख का अनुभव सो अपना दु:ख समझा।

ऐसे फालो फादर कर परोपकार की भावना से सम्पन्न बनो तब विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न होगा।

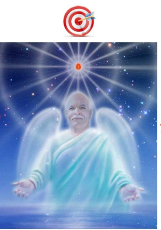 = 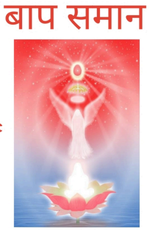 बाप समान

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.2 अमृतवेले की विशेषतायें

(ए) मीठे बच्चे, दिन में भल काम करो, परन्तु अमृतवेले 4 से 5 बजे तक बैठ कर याद करो, तो बहुत **सुख फील होगा**। मनसा, वाचा, कर्मणा सबको सुख देने का ही पुरुषार्थ करना है। **अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने के लिए अमृतवेले विशेष एकान्तवासी बनो**। रूहानी कमाई वाले बच्चे शरीर निर्वाह करते हुए भी सुबह उठ कर बहुत-बहुत प्यार से बाप को याद करेंगे। **आत्मा उड़ती रहेगी** और बाप समान रहमदिल बन अपने ऊपर और सर्व के ऊपर रहम करेगी। सबको बाप का परिचय देंगे। नये-नये बहुत ऐसे भी निकलेंगे जो पुरानों से भी तीखे जायेंगे। मार्जिन है। अमृतवेले याद में बैठने की आदत पड़ जाये, तो बड़ा मजा आयेगा।

(ऐ) बाप ने समझाया है **खुशी का पारा चढ़ेगा अमृतवेले**। दिन और रात को वायुमण्डल बहुत गन्दा रहता है, उस समय याद मुश्किल रहती है। अमृतवेले का समय गाया हुआ है। उसी समय सभी आत्मायें थक कर, शरीर से डिटैच होकर

सो जाती हैं। वह है शुभ-मुहूर्त। ऋषि-मुनि, भक्त लोग भी अमृतवेले उठ कीर्तन आदि करते हैं क्योंकि उस समय शुद्ध वायुमण्डल रहता है। इसलिए अमृतवेले के शुभ-मुहूर्त में बाप को बहुत प्यार से याद कर, खुशी का पारा चढ़ाना चाहिए। चलते-फिरते भी याद का अभ्यास करना है। सवेरे उठ कर याद करने से उसका **नशा फिर सारा दिन रहेगा**।

(ओ) बाबा कहते हैं सवेरे उठ बाप को याद करो और विचार सागर मंथन के लिए अमृतवेले का टाइम अच्छा है। **विचार सागर मंथन करने से मक्खन अच्छा निकलता है**। विचार सागर मंथन करना है कि भगवान का परिचय सबको कैसे दें ?

(औ) मीठे बच्चे, अमृतवेला **विशेष प्रभु-पालना की वेला है**। इसका महत्व जान, पूरा लाभ लो। कहाँ भी मूँझो तो बाप से पूछो। तार में, चिट्ठी में अथवा फोन पर पूछ सकते हो। फोन सवेरे-सवेरे झट मिल सकता है क्योंकि उस समय सिवाय तुम्हारे, बाकी सब सोये रहते हैं। बाप श्रीमत देते हैं — मीठे बच्चे सवेरे-सवेरे उठ कर बाप की याद में बैठो, तो पूरा वर्सा मिलेगा।